स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचारों का अध्ययन

डॉ कुसुम यादव
एसो. प्रो. बी.एड. विभाग
चौ. चरण सिंह पी.जी. कॉलेज हैवरा इटावा (उत्तर प्रदेश)

सार

स्वामी विवेकानंद भारत के इतिहास में प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों में से एक थे। उनके काम को हमेशा भारत के इतिहास में बड़े योगदान के रूप में याद किया जाता है। वह एक भारतीय हिंदू थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन दुनिया भर में और साथ ही भारत में हिंदू धर्म को फैलाने में बिताया। उनके लिए धार्मिक होने का अर्थ है जीवन को इस तरह से जीना कि हम अपने उच्च स्वभाव, सत्य, अच्छाई और सुंदरता को अपने विचारों, शब्दों और कर्मों में प्रकट करें। सभी आवेग, विचार और कार्य जो किसी को इस लक्ष्य की ओर ले जाते हैं, स्वाभाविक रूप से समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण हैं, और सच्चे अर्थों में नैतिक हैं।

स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार, हमें तकनीकी शिक्षा और अन्य सभी चीजों की आवश्यकता है जो उद्योगों को विकसित कर सकें, ताकि लोग सेवा की तलाश करने के बजाय, अपने लिए पर्याप्त कमाई कर सकें । स्वामी जी के अनुसार भारत को पश्चिमी देशों से वह सब लेना चाहिए जो उनकी सभ्यता में अच्छा है। उनका कहना है कि एक संतुलित राष्ट्र के विकास के लिए हमें पश्चिम की गतिशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपने देश की आध्यात्मिकता के साथ जोड़ना होगा। संपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम को इस प्रकार नियोजित किया जाना चाहिए कि यह युवाओं को देश की भौतिक प्रगति में योगदान करने के साथ-साथ भारत की आध्यात्मिक विरासत के सर्वोच्च मूल्य को बनाए रखने के लिए तैयार करे।

परिचय

"उठो निडर बनो, मजबूत बनो, जानो कि तुम अपने भाग्य के निर्माता खुद हो। आप जो भी ताकत और सफलता चाहते हैं वह आपके भीतर है।"

स्वामी विवेकानंद का जन्म 1863 में कोलकाता में हुआ था। उनका मूल नाम नरेंद्र दत्त था। उनके पिता कोलकाता हाई कोर्ट में वकील थे। विवेकानंद को धार्मिक स्वभाव और उच्च बुद्धि अपने पिता से विरासत में मिली थी। बचपन में वे अपने धर्मपरायण माता-पिता से बहुत प्रभावित थे। वह प्रबुद्ध और 'विवेक' से संपन्न थे और उन्हें विवेकानंद के नाम से जाना जाता था।

विवेकानंद एक सच्चे वेदांतवादी थे। वे एक व्यावहारिक संत, गतिशील विश्व प्रेमी और मानव प्रेमी थे, जो मानव जाति को बहुत प्यार करते हैं। वे विश्व के प्रसिद्ध व्यक्ति थे। 1871 में, आठ साल की उम्र में, नरेंद्र नाथ ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर के मेट्रोपॉलिटन इंस्टीट्यूशन में दाखिला लिया, जहाँ वे स्कूल जाना चाहते थे जब तक कि उनका परिवार 1877 में रायपुर नहीं चला गया। 1879 में, उनके परिवार के कोलकाता लौटने के बाद, वे एकमात्र छात्र थे। प्रेसीडेंसी कॉलेज प्रवेश परीक्षा में प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त किये। वे दर्शनशास्त्र, धर्म, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला में एक उत्साही पाठक थे।

विवेकानंद वेद, उपनिषद, भगवद गीता, महाभारत और पुराणों सहित हिंदू शास्त्रों में भी रुचि रखते थे। 1881 में उन्होंने ललित कला की परीक्षा उत्तीर्ण की और 1884 में कला स्नातक की डिग्री पूरी की। पश्चिमी दार्शनिकों का अध्ययन करते हुए, उन्होंने संस्कृत शास्त्र और बंगाली साहित्य भी सीखा। विलियम हेस्टी (क्रिश्चियन कॉलेज, कोलकाता के प्राचार्य जहां से नरेंद्र ने स्नातक की उपाधि प्राप्त की) ने लिखा, "नरेंद्र वास्तव में एक प्रतिभाशाली हैं। मैंने दूर-दूर की यात्राएँ की हैं, लेकिन मुझे कभी भी उनकी प्रतिभा और संभावनाओं का एक लड़का नहीं मिला, यहाँ तक कि जर्मन विश्वविद्यालयों में दार्शनिक छात्रों के बीच भी। वह जीवन में अपनी पहचान बनाने के लिए बाध्य है। "

1881 के अंत या 1882 की शुरुआत में, नरेंद्र दो दोस्तों के साथ दक्षिणेश्वर गए और रामकृष्ण से मिले। यह मुलाकात उनके जीवन का टर्निंग प्वाइंट साबित हुई। हालाँकि उन्होंने शुरू में रामकृष्ण को अपने शिक्षक के रूप में स्वीकार नहीं किया और उनके विचारों के खिलाफ विद्रोह किया, वे उनके व्यक्तित्व से आकर्षित हुए और अक्सर दक्षिणेश्वर में उनसे मिलने लगे। विवेकानंद ने पूरे भारत में 12 वर्षों तक वेदांत शास्त्रों और दर्शन का प्रचार करते हुए यात्रा की। रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के बाद, विवेकानंद ने 1876 में अपने शिष्यों की मदद से रामकृष्ण मिशन की स्थापना की और राहत केंद्रों की स्थापना की। उन्होंने अपने गुरु के संदेश का प्रसार किया जो वास्तव में एशिया, यूरोप और अमेरिका में वेदांत का सिद्धांत और अभ्यास था। विवेकानंद एक गहन विद्वान, एक प्रख्यात वेदांतवादी, एक दार्शनिक और एक ब्रह्मचारी थे। वे भारतीय अध्यात्म के अमृत में गहरे डूबे हुए थे।

विवेकानंद का दर्शन

विवेकानंद ने ईश्वर को सर्वोच्च शक्ति के रूप में वर्णित किया है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी है। मनुष्य ईश्वर का अवतार है, ईश्वर मनुष्य में ही प्रकट होता है। वह आगे कहते हैं कि आत्मा दिव्य और अमर है। इसलिए पूर्ण आत्मा (ब्रह्मा) और व्यक्तिगत आत्मा में कोई अंतर नहीं है। विवेकानंद वेदांत दर्शन से बहुत प्रभावित थे। उनके लिए वेदांत शाश्वत है। मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य निर्माता (ईश्वर) के साथ एकता प्राप्त करना है। स्वामीजी का धर्म पर व्यापक दृष्टिकोण था। उनका धर्म प्रकृति में सार्वभौमिक है और सार्वभौमिक भाईचारे पर आधारित है। उनके लिए मनुष्य की पूजा ही ईश्वर की वास्तविक पूजा है। दूसरे शब्दों में मानवता की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। उनके अनुसार वास्तविक सुख न तो शरीर में है और न ही मन में, बल्कि जीवन की स्वतंत्रता में है। इस प्रकार जीवन का लक्ष्य स्वतंत्रता है।

चित्र: स्वामी विवेकानंद जी

स्वतंत्रता ब्रह्मांड का मकसद है, स्वतंत्रता लक्ष्य है। गीता में कर्म योग, शक्ति योग, राज योग और ज्ञान योग का उल्लेख है। वह एक अध्यात्मवादी थे, उन्होंने खुशी-खुशी अध्यात्म को विज्ञान के साथ मिश्रित किया। वेदांत की उनकी व्याख्या वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है।

शिक्षा का विवेकानंद दर्शन उनके सामान्य दर्शन की एक शाखा है। उनका मानना था कि जन्म के समय मनुष्य पूर्ण होता है। इसलिए, शिक्षा मनुष्य में पहले से ही पूर्णता की अभिव्यक्ति है। पूर्णता मनुष्य में पहले से ही निहित है और शिक्षा उसी की अभिव्यक्ति है। सभी को पूर्णता प्राप्त करने का अधिकार है। वास्तव में सभी पूर्णता के मार्ग में हैं और शिक्षा लक्ष्य प्राप्ति का साधन है।

उन्नीसवीं सदी के महत्वपूर्ण दौर में भारत के पढ़े-लिखे लोग ज्यादातर पश्चिम की संस्कृति पर मोहित थे। इसने बदले में उनमें एक तरह का अध्यात्मीकरण और राष्ट्रीयकरण पैदा कर दिया। उस सांस्कृतिक संकट में, विवेकानंद को पता था कि प्रचलित शिक्षा प्रणाली में क्या गलत है जिसका मानव जीवन के वास्तविक मूल्यों से कोई संबंध नहीं था। उन्होंने मानव प्रगति, अंतर्राष्ट्रीय समझ और विश्व शांति के लिए उपाय सुझाए। विवेकानन्द की दृष्टि में शिक्षा जड़ विचार नहीं है, बल्कि जीवन की प्रक्रिया और प्रतिमान है जिसके द्वारा जीवन के आंतरिक मूल्यों का निर्माण किया जा सकता है। तर्क और बुद्धि के व्यक्ति के पास सबसे अच्छा धन और शक्ति हो सकती है; फिर भी उसे मन की शांति तब तक नहीं मिल

सकती जब तक कि वह अपने दिव्य आयाम की खोज नहीं कर लेता। व्यक्ति के संपूर्ण मनुष्य में इस विकास को वेदांत मनुष्य का आध्यात्मिक विकास कहता है ।

श्री रामकृष्ण के प्रख्यात प्रेरित स्वामी विवेकानंद ने पश्चिम की सामाजिक-राजनीतिक संस्कृति के ऊपर और ऊपर अपने गुरु के इस दिव्य संदेश को दोहराया। उनके विचार में सच्ची शिक्षा आधुनिक विज्ञान के साथ वेदांत का सम्मिश्रण है। पुनरुत्थानशील भारत के अग्रदूत के रूप में उन्हें पश्चिम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी उधार लेने में भी कोई संकोच नहीं था। यहां उनकी सार्वभौमिक और साथ ही मन की प्रवृत्ति का पता चला है।

रंगनाथानंद कहते हैं, "स्वामी विवेकानंद शब्द के हर अर्थ में, एक विश्व आध्यात्मिक शिक्षक। पूर्व या पश्चिम में उनके सभी शब्द पुरुषों और महिलाओं को आध्यात्मिक विरासत में बुलाने के लिए थे।

उसके लिए ज्ञान अपने आप में शिक्षा नहीं है जब तक कि उसके साथ बुनियादी मानवीय मूल्य न हों जो नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य हैं। वास्तव में विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने मनुष्य और मनुष्य के बीच की भौतिक दूरी को मिटा दिया है, लेकिन मनुष्य और मनुष्य के बीच की मानसिक और भावनात्मक दूरी को मिटाने की समस्या का समाधान होना अभी बाकी है।

उनका शैक्षिक उद्देश्य संपूर्ण मानव व्यक्तित्व के विकास की ओर ले जाता है, मनुष्य और मनुष्य के बीच एक अनंत आत्म के रूप में एक खाई को पाटने के लिए। मनुष्य में पहले से ही देवत्व की अभिव्यक्ति के रूप में धर्म की परिभाषा के अनुसार, विवेकानंद ने कोई नई अवधारणा प्रतिपादित नहीं की है। उन्होंने आधुनिक मुहावरे में केवल वही व्यक्त किया है जो वेदांत के सभी संप्रदायों ने हमेशा किया है, अर्थात्, आत्मा या आत्मा ब्रह्म का अभिन्न अंग है या ब्रह्म के समान है। आत्म-अभिव्यक्ति की प्रक्रिया में मुख्य समस्या स्वार्थ और आने वाले दोषों के रूप में बाधाओं को दूर करना है। इसके लिए बाधाओं को दूर करने के लिए, अपनी संभावित दिव्यता को प्रकट करने के लिए, योग आवश्यक है।

प्राचीन आदर्श के अनुरूप, विवेकानंद ने एक शिष्य और एक शिक्षक के रूप में सफलता के लिए आवश्यक परिस्थितियों का स्पष्ट रूप से वर्णन किया है। सर्वप्रथम शिष्य में विचार, वाणी और कर्म की

शुद्धता होनी चाहिए। दूसरे, उसे ज्ञान की वास्तविक प्यास होनी चाहिए। जब तक इस आवश्यकता को महसूस नहीं किया जाएगा, शिक्षण की अन्य सभी शर्तों का कोई फायदा नहीं होगा। तीसरा, उनके सीखने के प्रयास में दृढ़ता होनी चाहिए, जो सफलता की पूर्व शर्त है।

जहाँ तक शिक्षक की योग्यता का प्रश्न है, सम्भवतः यह माना जा सकता है कि चूँकि शिक्षक हमेशा विद्यार्थी होता है, उसमें ऊपर वर्णित विद्यार्थी के सभी गुण होने चाहिए। वास्तव में शिक्षक का कार्य न तो सूचना का संचार है और न ही बुद्धि की उत्तेजना; यह शिष्य को प्रभावित करने की बात है ताकि उसे रूपांतरित किया जा सके। विवेकानंद के शैक्षिक विचार में वास्तविक गुरु अपरिहार्य है।

विवेकानंद ने भारत के लिए अपनी शिक्षा को 'मानव-निर्माण' कहा। वह मनुष्य को बनाना चाहता था क्योंकि उसने इस सत्य की कल्पना की थी कि भारत की जनता ने मानव प्रकृति की पूर्ण महिमा प्राप्त नहीं की है। उन्होंने मानव-निर्माण शिक्षा और मानव-निर्माण धर्म के लिए कड़ी मेहनत की, जो समाज के साथ-साथ व्यक्तिगत सदस्यों में उत्कृष्टता का एक पैटर्न बनाने के लिए थे।

आधुनिक भारत के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए विवेकानंद ने अध्ययन में ध्यान को एक पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित किया है। प्राचीन भारत के ऋषियों द्वारा अनुभव किए गए सत्य को साकार करने के लिए एकाग्रता और ध्यान प्रमुख तरीके हैं। अतीत हमारी नींव है, वर्तमान हमारी सामग्री है, भविष्य हमारा लक्ष्य और शिखर है। राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में प्रत्येक का अपना उचित और स्वाभाविक स्थान होना चाहिए।

ध्यान के बारे में विवेकानंद ने टिप्पणी की, "इससे पहले कि हम मन को नियंत्रित कर सकें, हमें इसका अध्ययन करना चाहिए। हमें इस अस्थिर मन को पकड़ना है और इसे इसके भटकने से खींचना है और इसे एक विचार पर स्थिर करना है; बार-बार यह किया जाना चाहिए। इच्छा शक्ति से हमें मन को पकड़ना चाहिए और उसे रोकना चाहिए और ईश्वर की महिमा को प्रतिबिंबित करना चाहिए।" इस प्रकार मन को पूर्ण करने के लिए एकाग्रता और ध्यान दोनों की आवश्यकता होती है ताकि इसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक उपयुक्त साधन के रूप में विकसित किया जा सके।

स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन वेदांत दर्शन का प्रतिबिंब है। उनके अनुसार शिक्षा आंतरिक मनुष्य के विकास का सर्वोत्तम साधन है। यह मानव जाति को उसकी गरीबी और लाचारी से उबारने का साधन भी है। विवेकानंद ने शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में अपनी राय इस प्रकार व्यक्त की:

शिक्षा के उद्देश्य पर राय

शिक्षा और समस्त प्रशिक्षण का अंतिम उद्देश्य मानव निर्माण होना चाहिए। विवेकानंद केवल एक व्यक्ति हैं। इस प्रकार शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को मनुष्य के व्यक्तित्व में बदलना है। हालाँकि वह शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों की सिफारिश करता है:

1. चरित्र निर्माण: शिक्षा को चरित्र विकास की दिशा में प्रयास करना चाहिए जिससे हमारा तात्पर्य इच्छा शक्ति के विकास से है, जो साहस, सहनशक्ति और निडरता की ओर ले जाए।

2. आत्म-विश्वास और आत्म-साक्षात्कार का निर्माण: शिक्षा से लोगों को संतुलित मानवीय संबंधों के आधार पर आत्म-विश्वास और आत्मनिर्भरता का निर्माण करने में मदद मिलनी चाहिए। स्वामीजी स्वयं में उस विश्वास को और ईश्वर में विश्वास रखते हैं - यही महानता का रहस्य है।

3. व्यक्तित्व का विकास : व्यक्तित्व वह प्रभाव है जो व्यक्ति दूसरों पर बनाता है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित करना होना चाहिए और इस तरह एक महान व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहिए।

4. सार्वभौमिक भाईचारे को बढ़ावा देना: विवेकानंद न केवल एक देशभक्त और प्रकृतिवादी थे, बल्कि एक महान अंतर्राष्ट्रीयवादी भी थे। उनके अनुसार शिक्षा से भाईचारे की भावना पैदा होनी चाहिए और ईश्वर की शक्ति के लिए मानव जाति की एकता उच्चतम से निम्नतम सभी में मौजूद है।

5. नैतिक चरित्र का विकास : शिक्षा को अच्छे नैतिक चरित्र के निर्माण पर जोर देना चाहिए। चरित्र निर्माण के बिना शिक्षा कोई शिक्षा नहीं है।

6. ईश्वर में आस्था का विकास : शिक्षा को ऐसे लोगों को तैयार करना चाहिए जो दूसरों के लाभ के लिए भौतिक सुख-सुविधाओं के स्वयंभू बलिदान के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

7. आत्मनिर्भरता का विकास: स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य आत्मनिर्भरता है। व्यक्ति को पारंपरिक विषय के साथ व्यावहारिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

8. शारीरिक और आध्यात्मिक विकास: शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में शारीरिक और आध्यात्मिक विकास होना चाहिए। वह चाहता था कि एक आदमी के पास लोहे की मांसपेशियों और नसों के स्टील के साथ एक मजबूत शरीर होना चाहिए।

पाठ्यक्रम पर राय

शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उन्होंने नीचे दिए गए पाठ्यक्रम का सुझाव दिया है:

1. बच्चों को भूगोल, विज्ञान, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, कला, कृषि, औद्योगिक, तकनीकी विषयों जैसे शारीरिक शिक्षा के साथ-साथ पढ़ाया जाना चाहिए।

2. आध्यात्मिक विकास के लिए धर्म, दर्शन, पुराण, उपनिषदों के अध्ययन को शामिल करना चाहिए।

3. व्यावसायिक विषयों को प्रत्येक बच्चे के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

4. लड़कियों के लिए पाठ्यक्रम में पाक कला, सुई, शिल्प, बच्चों का पालन-पोषण आदि शामिल होना चाहिए।

शिक्षण की पद्धति पर राय

स्वामीजी ने शिक्षा के वही प्राचीन तरीके बताए जो गुरुकुलों में प्रचलित थे। विवेकानंद द्वारा सुझाई गई विधियाँ हैं -

1. ध्यान और एकाग्रता विधि: विवेकानंद का मानना था कि एकाग्रता की शक्ति जितनी अधिक होती है उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त होता है।

2. व्याख्यान और चर्चा विधि: स्वामीजी का मानना है कि व्याख्यान और चर्चा विधि आवश्यक तथ्यों को विस्तार से बताने में बहुत सहायक है

3. सेल्फ लर्निंग मेथड: विवेकानंद भी शिक्षा की प्रक्रिया में सेल्फ लर्निंग मेथड में विश्वास करते थे। यहाँ गुरु' शिक्षक मार्गदर्शक और सहायक के रूप में ही कार्य करते हैं।

शिक्षक की भूमिका पर राय

विवेकानंद के पास शिक्षक को बताने के लिए कई शब्द हैं। शिक्षक की व्यावसायिक दक्षताओं की तुलना में शिक्षक की पवित्रता और चरित्र को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है। विवेकानंद के अनुसार एक सच्चा शिक्षक वह है जो तुरंत छात्र के स्तर तक आ सकता है और "अपनी आत्मा को छात्र की आत्मा में स्थानांतरित कर सकता है और छात्र की आंखों से देख सकता है, उसके कानों से सुन सकता है और उसकी समझ के माध्यम से समझ सकता है।

शिक्षक की भूमिका पर उनके दार्शनिक विचार दर्शाते हैं कि

1. शिक्षक का व्यक्तिगत जीवन उसके पास मौजूद ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है।

2. शिक्षक को अपने जादू के माध्यम से अपने छात्रों को प्रभावित करना चाहिए।

3. उनके व्यक्तित्व को उन्हें (छात्रों) को मजबूत और शक्तिशाली बनने में मदद करनी चाहिए।

4. शिक्षक द्वारा छात्रों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए।

5. एक शिक्षक में मानवता के प्रति अपार प्रेम होना चाहिए। लोगों की सेवा करने के लिए उसे अपना और अपनी भौतिक भलाई का दाता होना चाहिए।

अनुशासन पर राय

स्वामी विवेकानंद ने बाल केंद्रित शिक्षा पर जोर दिया जिसमें बच्चे को गतिविधि और स्वयं सीखने की पूरी स्वतंत्रता दी जाती है। उसे प्राकृतिक वातावरण में विकसित होने का पूरा मौका दिया जाना चाहिए। इस प्रकार स्वामीजी "आत्म अनुशासित" में विश्वास करते हैं।

उनके अनुसार प्रत्येक बच्चा स्वयं का शिक्षक होता है। उनके मन में ज्ञान की प्रतिभा है। बाहरी शिक्षक का कार्य केवल बच्चों का मार्गदर्शन और प्रेरणा देना है ताकि उनके आंतरिक ज्ञान को बाहर लाया जा सके। स्वामी विवेकानंद के वेदांत दर्शन ने जीवन के लक्ष्य और शिक्षा के लक्ष्य को एक नई व्याख्या दी। उन्होंने 'मनुष्य निर्माण' राष्ट्र निर्माण शिक्षा पर बल दिया। उन्होंने चरित्र निर्माण राष्ट्र के लिए निस्वार्थ सेवा, स्वतंत्रता और समानता पर जोर दिया। स्वामीजी स्त्री शिक्षा के भी बड़े हिमायती थे।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद अपना पूरा जीवन दुनिया भर में आध्यात्मिक ज्ञान फैलाने और भारत में गरीबों के उत्थान में लगाते हैं। भारतीय इतिहास में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उन्होंने महसूस किया कि शिक्षा के माध्यम से ही जनता का उत्थान संभव है। शिक्षा अपने रचनात्मक, व्यावहारिक और व्यापक चरित्र को उजागर करती है। वह जोर देकर कहते हैं कि यदि समाज को सुधारना है, तो शिक्षा को उच्च और निम्न सभी तक पहुँचाना होगा, क्योंकि व्यक्ति ही समाज के घटक हैं।

मनुष्य में गरिमा की भावना तब उठती है जब वह अपनी आंतरिक आत्मा के प्रति सचेत हो जाता है, और यही शिक्षा का उद्देश्य है। वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के माध्यम से लाए गए नए मूल्यों के साथ भारत के पारंपरिक मूल्यों के सामंजस्य का प्रयास करता है । नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से मनुष्य के परिवर्तन में ही वह सभी सामाजिक बुराइयों का समाधान ढूंढता है। हमारे अपने दर्शन और संस्कृति के दृढ़ आधार पर शिक्षा की स्थापना करते हुए, वह आज की सामाजिक और वैश्विक बीमारी के लिए सर्वोत्तम उपचार दिखाते हैं।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

[1] आदिश्वरानंद, स्वामी, एड। (2006), विवेकानंद, विश्व शिक्षक: मानव जाति की आध्यात्मिक एकता पर उनकी शिक्षाएँ, आदिश्वरानंद, स्वामी, एड। (2006), विवेकानंद, विश्व शिक्षक: मानव जाति की आध्यात्मिक एकता पर उनकी शिक्षाएँ वुडस्टॉक, वरमोंट: स्काईलाइट पथ प्रकाशन, आईएसबीएन 1-59473-210-8

[2] भारती, केएस (1998), इनसाइक्लोपीडिया ऑफ प्रख्यात विचारकों: द पॉलिटिकल थॉट ऑफ विवेकानंद, नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, आईएसबीएन 978-81-7022-709-0

[3] चट्टोपाध्याय, राजगोपाल (1999), स्वामी विवेकानंद इन इंडिया: ए करेक्टिव बायोग्राफी, मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशन, आईएसबीएन 978-81-208-1586-5

[4] गुप्ता, एनएल (2003), स्वामी विवेकानंद, दिल्ली: अनमोल प्रकाशन, आईएसबीएन 978-81- 261-1538-9

[5] मुखर्जी, मणिशंकर (2011), द मॉन्क अस मैन: द अननोन लाइफ ऑफ स्वामी विवेकानंद, आईएसबीएन 978-0-14-310119-2